UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 7 बाललीला (मंजरी)

समस्त गद्यांशों की व्याख्या

'बाललीला' सूरदास (1)

मैया मोहिं ..... तू पूत।

संदर्भ:
प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी-7' के 'बाललीला और भक्तिपद' नामक पाठ से ली गई हैं। इसके रचयिता महाकवि सूरदास हैं। कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि सूरदास जी वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्र में हिंदी साहित्य में सर्वोच्च स्थान रखते हैं।

प्रसंग:
प्रस्तुत पंक्तियों में बालकृष्ण की लीलाओं का वर्णन है।

व्याख्या:
हे माता (यशोदा), मुझे बलराम भैया बहुत चिढ़ाते हैं। मुझे वह मोल खरीदा हुआ बताते हैं, और कहते हैं कि मुझे तुमने जन्म नहीं दिया है। इस बात को सुनकर मैं क्रोध के मारे खेलने भी नहीं जाता। वह बार-बार पूछते हैं कि मेरे माता-पिता कौन हैं। ये नन्द जी और यशोदा दोनों गोरे वर्ण के हैं। तुम काले शरीर वाले कहाँ से आ गए। सब ग्वाले चुटकी देकर नाचते, हँसते और मुस्कराते हैं। तुम हमेशा मुझे ही पीटना जानती हो, बलराम भैया को कभी नहीं डाँटती हो। बालक श्रीकृष्ण के मुख से क्रोधपूर्ण बातें सुनकर यशोदा मन-ही-मन में खुश होती हैं। वह कहती हैं। कि कृष्ण सुनो, बलराम तो चुगली करने वाला, जन्म से ही धूर्त है। सूरदास जी कहते हैं कि यशोदा कृष्ण से कहती हैं कि मुझे गायों के धन की सौगन्ध है कि मैं ही तुम्हारी माता हूँ और तुम मेरे ही पुत्र हो।

'बाललीला' सूरदास (2)

जसोदा हरि पालनै ..... नंदभामिनी पावै।

संदर्भ: पूर्ववत्।

प्रसंग:
प्रस्तुत पद्यांश में सूरदास जी ने माँ यशोदा द्वारी बालक श्री कृष्ण को पालने में सुलाने का वर्णन किया है।

व्याख्या:
यशोदा जी श्याम को पालने में झुला रही हैं। कभी वे पालना झुलाती हैं, कभी प्यार करके बाल कृष्ण को पुचकारती हैं और चाहे जो कुछ गाती जा रही हैं। (वे गाते हुए कहती हैं)-निद्रा! तू मेरे लाल के पास आ! तू क्यों आकर इसे सुलाती नहीं है। तू झटपट क्यों नहीं आती? तुझे कान्हा बुला रहा है। श्यामसुन्दर कभी पलकें बंद कर लेते हैं, कभी अधर फड़काने लगते हैं। उन्हें सोते समझकर माता चुप हो जाती हैं और दूसरी गोपियों को भी संकेत करके

https://www.evidyarthi.in/

समझाती हैं कि यह सो रहा है, तुम सब भी चुप रहो। इसी बीच में श्याम आकुल होकर जग जाते हैं, यशोदा फिर मधुर स्वर में गाने लगती हैं। सूरदास जी कहते हैं कि जो सुख देवताओं तथा मुनियों के लिये भी दुर्लभ है, वही श्याम को बालरूप में पाकरे लालन-पालन तथा प्यार करने का सुख श्रीनन्द की पत्नी प्राप्त कर रही हैं।

तुलसीदस (1)

तन की दुति स्याम ..... मन-मंदिर में बिहरैं।

संदर्भ:
प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी पाठ्य-पुस्तक मंजरी-7′ से उद्धृत है। इसके रचयिता कवि शिरोमणि तुलसीदास जी हैं। तुलसीदास जी रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं और हिंदी साहित्य के प्राचीन कवियों में इनका सर्वोच्च स्थान है।

प्रसंग:
प्रस्तुत पद्यांश में तुलसीदास ने श्रीराम के और महाराजा दशरथ के अन्य पुत्रों के बाल-रूप का मनोहरी वर्णन किया है।

व्याख्या:
उनके शरीर की आभा नील कमल के समान है तथा नेत्र कमल की शोभा को हरते हैं। धूलि से भरे होने पर भी वे बड़े सुन्दर जान पड़ते हैं और कामदेव की महती छवि को भी दूर कर देते हैं। उनके नन्हें-नन्हें दाँत बिजली की चमक के समान चमकते हैं और वे किलक-किलककर मनोहर बाललीलाएँ करते हैं। अयोध्यापति महाराज दशरथ के वे चारों बालक तुलसीदास के मनमन्दिर में सदैव बिहार करें।

तुलसीदस (2)

कबहुँ ससि ..... मन-मन्दिर में बिहरैं।

संदर्भ:
पूर्ववत्।

प्रसंग:
प्रस्तुत पद्यांश में तुलसीदास ने श्रीराम के और महाराजा दशरथ के अन्य पुत्रों के बाल-रूप का मनोहरी वर्णन किया है।

व्याख्या:
कभी चन्द्रमा को माँगने की हठ करते हैं, कभी अपनी परछाहीं देखकर डरते हैं, कभी हाथ से ताली बजा-बजाकर नाचते हैं, जिससे सब माताओं के हृदय आनन्द से भर जाते हैं। कभी हठपूर्वक कुछ कहते हैं (माँगते हैं) और जिस वस्तु के लिए अड़ते हैं, उसे लेकर ही मानते हैं। अयोध्यापति महाराज दशरथ के वे चारों बालक तुलसीदास के मन मंदिर में सदैव विहार करें।

https://www.evidyarthi.in/